Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:12(3), December, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

ममता कालिया उपन्यासों में चित्रित समाज की मुख्य विशेषताएँ

प्रो. डॉ. के. कृष्ण M.A, Ph.D
प्राध्यापक
शोध निर्देशक , हिन्दी विभाग
आचार्या नागार्जुना विश्व विद्यालय
गुंटूर, cell: 9395364161

पेक. बाजी
M.A, (Ph.D) हिन्दी पण्डित
शोध छात्रा
आचार्या नागार्जुना विश्व विद्यालय
गुंटूर, cell: 9700107983
Gmail ID: chinni1949@gmail.com

Abstract (विषय प्रवेश)

ममता कालिया के उपन्यासों में मुख्यतः मध्यवर्गीय समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है, जिसमें स्त्री-जीवन की जटिलताओं, दांपत्य संबंधों के बिखराव, आर्थिक संघर्षों और महा नगरीय जीवन के तनावों को गहराई से दर्शाया गया है। वे समाजशास्त्रीय दृष्टि से सामाजिक समस्याओं और विसंगतियों को अपनी रचनाओं का विषय बनाती हैं। ममता कालिया के उपन्यासों में 2025 का समाज मुख्य रूप से शिक्षित और कामकाजी महिलाओं के सशक्तिकरण, उनकी चुनौतियों, पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच टकराव, और लिंग-आधारित सामाजिक असमानताओं को दर्शाता है। उनके लेखन में समाज में मूल्यों के पतन और युवा पीढ़ी की निराशा को भी उजागर किया गया है।

ममता कालिया एक प्रमुख भारतीय लेखिका , कवियत्री और शिक्षिका हैं , जिन्होंने हिंदी में कहानी, उपन्यास, नाटक, और कविता सहित साहित्य की कई विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने अपने लेखन में मध्यवर्गीय भारतीय महिलाओं के जीवन और सामाजिक यथार्थ को चित्रित किया है। 'दुक्खम सुखम' उपन्यास के लिए उन्हें व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया था , और उन्होंने अपने करियर के दौरान कई अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कार भी जीते हैं।

ममता कालिया का जन्म 2 नवंबर, 1940 को वृंदावन, उत्तर प्रदेश में हुआ था। वह एक प्रमुख भारतीय लेखिका हैं जिन्होंने कहानी , उपन्यास, नाटक, निबंध, और कविता सहित साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लिखा है। उन्होंने कई साहित्यिक पुरस्कार जीते हैं और उनके उपन्यास 'दुक्खम सुखम' के लिए उन्हें व्यास सम्मान से भी सम्मानित किया गया है।

व्यक्तिगत जीवन और शिक्षा:

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:12(3), December, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

- **जन्म:** 2 नवंबर, 1940 को वृंदावन (मथुरा) में हुआ।
- **शिक्षा:** उन्होंने दिल्ली और मुंबई में शिक्षा प्राप्त की और अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की डिग्री हासिल की।
- **परिवार:** उनके पति, स्वर्गीय रवींद्र कालिया, भी एक प्रसिद्ध हिंदी लेखक थे।

साहित्यिक योगदान

- **विधाएँ:** उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, कविता और पत्रकारिता सहित साहित्य की लगभग सभी विधाओं में योगदान दिया है।
- **प्रमुख कृतियाँ:**
  - **उपन्यास:** 'बेघर', 'नरक दर नरक', 'दुक्खम सुखम', 'दौड़', 'अँधेरे का ताला'।
  - **कहानी संग्रह:** 'छुटकारा', 'सीट नम्बर छह', 'उसका यौवन', 'बोलने वाली औरत', 'थियेटर रोड के कौव्वे'।
  - **कविता:** 'आत्मा अठन्नी का नाम है', 'आप न बदलेंगे'।
- **विषय-वस्तु:** उनकी रचनाएँ अक्सर मध्यवर्गीय परिवारों और महिलाओं के जीवन के संघर्षों पर केंद्रित होती हैं।

अन्य कार्य

- **अध्यापन:** उन्होंने दिल्ली और मुंबई के कॉलेजों में अध्यापन का कार्य किया और सेवानिवृत्त होने के बाद कोलकाता में भारतीय भाषा परिषद की पूर्व निदेशक थीं।
- **पुरस्कार और सम्मान:** उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें 2017 में उपन्यास 'दुक्खम सुखम' के लिए **व्यास सम्मान** शामिल है।

ममता कालिया उपन्यासों में चित्रित समाज की मुख्य विशेषताएँ

1. मध्यवर्गीय स्त्री का जीवन:

- ममता कालिया के साहित्य के केंद्र में मध्यवर्गीय, कामकाजी महिला रहती है, जो घर और बाहर दोनों जगह संघर्ष करती है।
- उपन्यासों में यह दिखाया गया है कि आधुनिक और शिक्षित होने के बावजूद, वह परंपरागत धारणाओं और पूर्वाग्रहों से जूझती है।
- वह आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी बनना चाहती है, लेकिन समाज और परिवार की अपेक्षाओं के कारण उसकी राह आसान नहीं होती।

2. पारिवारिक और दांपत्य संबंध:

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:12(3), December, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

- उनके उपन्यासों में पति-पत्नी के रिश्तों में बढ़ता अजनबीपन, झूठ, धोखा, अविश्वास और कड़वाहट साफ दिखाई देती है।
- जैसे उपन्यास *'एक पत्नी के नोट्स'* में मानसिक हिंसा की शिकार पत्नी की व्यथा को दर्शाया गया है, जो अपने पति के हर शक का शिकार होती है।
- उपन्यास *'बेघर'* में दांपत्य जीवन के बिखराव और यौन शुचिता जैसी रूढ़िवादी विचारधाराओं को चुनौती दी गई है।

3. महानगरीय जीवन और आर्थिक दबाव:

- कालिया के उपन्यास अक्सर महानगरों के जीवन और वहाँ के तनाव को दर्शाते हैं।
- 'दौड़' * जैसे उपन्यासों में बाजारवाद और आर्थिक उदारीकरण के कारण इंसानी रिश्तों में आई स्वार्थपरता और मानवीय मूल्यों के पतन को उजागर किया गया है।
- कामकाजी महिलाएं नौकरी और गृहस्थी के बीच संतुलन बैठाने के दबाव का सामना करती हैं, जिससे उनके संबंधों में तनाव बढ़ता है।

4. सामाजिक विसंगतियां और विद्रूपताएँ:

- वे अपनी रचनाओं में समाज में व्याप्त विसंगतियों, पाखंडों और विद्रूपताओं पर तीखे व्यंग्य करती हैं।
- वे दर्शाती हैं कि कैसे कला, साहित्य और संस्कृति भी अब व्यवसाय बन गए हैं, जैसा कि उनके उपन्यास *'कल्चर वल्चर'* में चित्रित है।
- उनके साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक सभी तरह की विसंगतियों की अभिव्यक्ति मिलती है।

5. नारी चेतना और अस्मिता की खोज:

- ममता कालिया के पात्र अपनी अस्मिता की तलाश में रहते हैं। वे सिर्फ किसी की बेटी या पत्नी बनकर नहीं रहना चाहते, बल्कि अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहते हैं।
- वे अपनी रचनाओं में पुरुष-सत्तात्मक समाज में महिलाओं के संघर्षों को सामने लाती हैं और उन्हें अपने निर्णय खुद लेने के लिए प्रेरित करती हैं।
- उपन्यास *'दुक्खम सुक्खम'* में तीन पीढ़ियों की स्त्रियों के जीवन संघर्षों को दर्शाया गया है।

6. सशक्त और कामकाजी महिलाएँ:

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:12(3), December, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

उनके उपन्यासों में महिलाएँ अब न केवल घरेलू भूमिकाओं तक सीमित हैं, बल्कि वे डॉक्टर, मैनेजर, अध्यापिका और क्लर्क जैसे विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में सक्रिय हैं। वे अपने अधिकारों के प्रति सचेत हैं और निर्णय लेने में आत्मनिर्भर हैं।

7. आधुनिक और पारंपरिक मूल्यों का टकराव:

लेखिका ने शहरी जीवन में सह-जीवन (live-in relationships) जैसी नई जीवन शैली और पारंपरिक विवाह प्रथा के बीच पीढ़ीगत टकराव को दर्शाया है।

8. लिंग-आधारित संघर्ष:

ममता कालिया पुरुषवादी मानसिकता और समाज में महिलाओं के प्रति होने वाले भेदभाव को उजागर करती हैं। वह महिलाओं के शोषण, दहेज प्रथा और सम्मान की मांग जैसे मुद्दों को भी चित्रित करती हैं।

9. मानवीय मूल्यों का क्षण:

उनके साहित्य में युवाओं में घटते नैतिक मूल्यों , निराशा और रिश्तों में आई जटिलताओं को दर्शाया गया है।

10.बाजारवाद का प्रभाव:

बाजारवाद के बढ़ते प्रभाव और इसने महिलाओं के जीवन पर कैसे नए प्रभाव और समस्याएं पैदा की हैं, इसका भी चित्रण किया गया है।

11.यथार्थवादी चित्रण:

उनके उपन्यास यथार्थ पर आधारित होते हैं , जिसमें निम्न-मध्यवर्गीय जीवन की छोटी-छोटी सच्चाइयों, व्यंग्य और तीखे हास्य का समावेश है। अपने साहित्य में वे मुख्यतः प्रेम, विवाह, सामाजिक और पारिवारिक रिश्तों और आधुनिक समाज में मानवीय मूल्यों के पतन जैसे विषयों पर लिखती हैं।

रचनाओं की मुख्य विशेषताएँ

- **सामाजिक यथार्थवाद:** समाज की वास्तविकताओं, समस्याओं और संघर्षों को उजागर करती हैं।
- **सशक्त नारी चित्रण:** उनकी रचनाओं में महिला पात्र सशक्त, स्वतंत्र और संघर्षशील हैं, जो नारी जीवन की जटिलताओं और सामाजिक स्थिति को दर्शाती हैं।
- **मानव मनोविज्ञान की गहराई:** पात्रों के मानसिक और भावनात्मक जीवन का सूक्ष्म और प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:12(3), December, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

- **कामकाजी महिलाओं का चित्रण:** स्वयं एक कामकाजी महिला होने के नाते, उन्होंने काम करते समय महिलाओं के संघर्ष और समस्याओं को गहराई से चित्रित किया है।
- **भाषा शैली:** उनकी भाषा सरल, सहज और प्रवाहमय है, जिसमें तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों का प्रभावी उपयोग है।
- **आधुनिक रिश्तों और विवाह की समस्या:** आधुनिक युग में विवाह संस्था, रिश्तों में बदलाव और तलाक जैसी समस्याओं का चित्रण किया है।
- **युग बोध:** उनकी रचनाएँ समकालीन समाज और युग बोध को दर्शाती हैं, जिसमें व्यक्तिगत संघर्ष और सामाजिक बदलाव पर बल दिया गया है।
- **व्यंग्य:** वे आधुनिक जीवन की अर्थहीनता को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं।

उपन्यास : बेघर(1971), नरक दर नरक(1975), प्रेम कहानी(1980), लड़कियाँ(1987), एक पत्नी के नोट्स(1997), दौड़(2000), अँधेरे का ताला(2009), दुक्खम् - सुक्खम्(2009) कल्चर वल्चर(2016),सपनों की होम डिलीवरी(2017)

1. **बेघर(1971),** : 1971 के उपन्यास **'बेघर'** में समाज की विशेषताएं हैं: रूढ़िवादी और दकियानूसी सोच, जो लोगों को जकड़ लेती है, और मध्यवर्गीय समाज की निराशाएं, कुंठाएँ और अंतर्विरोध । उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे पुरानी सोच और पुरानी नैतिकता पुरुषसत्तावादी समाज में स्त्री को शोषित करती है और समाज का चरित्र चित्रण उस मानसिकता को भी दर्शाता है, जहाँ स्त्री को उसके अतीत से आंका जाता है और पीड़ित को कठघरे में खड़ा किया जाता है।

2. नरक दर नरक(1975),:

ममता कालिया के उपन्यास 'नरक दर नरक' की मुख्य विशेषताओं **में** सरल और ओजस्वी भाषा शैली**,** सामाजिक, आर्थिक और मानसिक तनावों से जूझती एक विवाहित महिला (उषा) का यथार्थवादी चित्रण**,** और बदलते मानवीय मूल्यों तथा रिश्तों के संघर्ष **को** दर्शाना है। यह उपन्यास उषा के प्रेम विवाह के बाद के जीवन के संघर्ष और उसके व्यक्तिगत व सामाजिक अपेक्षाओं के बीच फँस जाने की कहानी है, जहाँ वह एक स्वतंत्र इकाई के रूप में रहना चाहती है, लेकिन एक शिशु के जन्म के बाद उसकी दुनिया सिमट जाती है। उपन्यास में लेखक किसी को दोषी ठहराए बिना जीवन के संघर्ष और व्यक्ति तथा समाज के बीच तनाव को प्रस्तुत करते हैं।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:12(3), December, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

3. प्रेम कहानी(1980),:

प्रेम कहानी," आधुनिक समाज में प्रेम के संघर्ष और यथार्थवादी चित्रण पर केंद्रित है, जिसमें प्रेम विवाह की सफलता और असफलता, सामाजिक दबाव और प्रेम की जटिलताओं को दिखाया गया है। यह कहानी नारी चेतना, पारिवारिक संबंधों में तनाव और स्त्री की अपनी पहचान बनाने के संघर्ष जैसे विषयों को उजागर करती है, जो इसे आज भी प्रासंगिक बनाती है।

4. लड़कियाँ(1987) :

ममता कालिया के उपन्यास "लड़कियाँ" (1987) की मुख्य विशेषता यह है कि यह मुंबई जैसे महानगर में रहने वाली अविवाहित कामकाजी लड़कियों के जीवन, संघर्ष और शोषण को यथार्थवादी तरीके से चित्रित करता है। यह उपन्यास आधुनिक शहरी जीवन, युवा पीढ़ी के सपनों और संघर्षों, प्रतिभा और पराक्रम से अपना गंतव्य पाने की दृढ़ता को उजागर करता है।

5. एक पत्नी के नोट्स(1997)

ममता कालिया के उपन्यास 'एक पत्नी के नोट्स' (1997) की मुख्य विशेषताएं आधुनिक भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष के रिश्ते, स्त्री के संघर्ष और उसकी पहचान की तलाश , और परिवार में लिंग भेद जैसे विषयों का यथार्थवादी चित्रण हैं। यह उपन्यास आज की स्त्री के जीवन , उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और उसकी समस्याओं को उजागर करता है।

6. दौड़(2000)

ममता कालिया के उपन्यास 'दौड़' (2000) की मुख्य विशेषताएं एक ऐसे सामाजिक उपन्यास के रूप में हैं जो आधुनिक जीवन की जटिलताओं, बाज़ारवाद के दबाव, और बदलते पारिवारिक संबंधों पर केंद्रित है। यह उपन्यास आज के व्यक्ति के संघर्ष , पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के टकराव , और पीढ़ीगत संघर्षों को उजागर करता है , जो शहरी जीवन की आपाधापी और व्यावसायिक दबावों के बीच फंस जाता है।

7. अँधेरे का ताला(2009) :

ममता कालिया के उपन्यास "अँधेरे का ताला" (2009) की प्रमुख विशेषताएं कॉलेज के शैक्षणिक वातावरण, उसमें व्याप्त समस्याओं और शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त यथार्थ को चित्रित करना है । इसमें लेखिका ने कॉलेज की अध्यापिकाओं, छात्राओं और कर्मचारियों के जीवन से जुड़ी घटनाओं को दर्शाया है और इसमें छात्रों की भीड़ , प्रॉक्सी जैसी विसंगतियों का वर्णन है , जिससे उस समय की शिक्षा प्रणाली की वास्तविकता सामने आती है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:12(3), December, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

8. दुक्खम् - सुक्खम्(2009)

ममता कालिया के उपन्यास 'दुक्खम-सुक्खम' (2009) की मुख्य विशेषताओं में तीन पीढ़ियों की स्त्रियों के जीवन का चित्रण, संयुक्त परिवार का आधुनिकीकरण, पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच वैचारिक द्वंद्व और मथुरा की पृष्ठभूमि पर आधारित सामाजिक यथार्थवाद शामिल हैं। यह उपन्यास एक परिवार की कहानी के माध्यम से भारतीय परिवार की जटिलताओं और आधुनिक नारी के संघर्ष को दर्शाता है।

9. कल्चर वल्चर(2016),:

ममता कालिया के उपन्यास 'कल्चर वल्चर' (2016) की मुख्य विशेषताएं कोलकाता में एक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था के माध्यम से समकालीन समाज , कला और संस्कृति के व्यवसायीकरण को उजागर करना है। यह उपन्यास कला को कारोबार बनते हुए और संस्कृति के पतन को दर्शाता है, साथ ही यह भूमंडलीकरण और पूंजीवाद के नकारात्मक प्रभावों पर भी प्रकाश डालता है।

10. सपनों की होम डिलीवरी(2017):

ममता कालिया के उपन्यास "सपनों की होम डिलीवरी" (2017) की मुख्य विशेषताएं आधुनिक रिश्तों के बदलते स्वरूप , नए समय के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश , और रिश्तों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की चाहत हैं । उपन्यास में पति-पत्नी , माता-पिता और संतान , या प्रेमी-प्रेमिका जैसे रिश्तों में आए बदलावों को चित्रित किया गया है , और यह स्थापित किया गया है कि हर रिश्ता नई सोच और बदलती परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बिठाने का प्रयास कर रहा है , जिसमें किसी को दोषी नहीं ठहराया गया है।

ममता कालिया के साहित्य पर कई तुलनात्मक अध्ययन किए गए हैं, जिनमें उनके उपन्यासों और कविताओं में नारीवाद, कामकाजी महिलाओं के संघर्ष और समकालीन समाज का चित्रण जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इन अध्ययनों में उनके साहित्य का विश्लेषण किया गया है कि वह कैसे सामाजिक रूढ़ियों और पितृसत्ता को उजागर करते हैं और एक ऐसी दुनिया की कल्पना करते हैं जहां महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सकें।

- **नारीवाद और नारी-पुरुष संबंध:** कई अध्ययनों में कालिया के साहित्य में नारीवादी दृष्टिकोण और स्त्री-पुरुष संबंधों का गहन विश्लेषण किया गया है। उन्होंने दिखाया है कि कैसे सामाजिक और आर्थिक स्थिति के कारण महिलाएं अक्सर शोषित होती हैं और कैसे उन्हें रिश्तों में संघर्ष करना पड़ता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:12(3), December, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

- **कामकाजी और शिक्षित महिलाओं का चित्रण:** उनके उपन्यास और कहानियों में कामकाजी महिलाओं के जीवन को दर्शाया गया है , जिसमें वे काम और परिवार के बीच संतुलन बनाने के लिए संघर्ष करती हैं। उनके काम में आधुनिक भारतीय महिला के जीवन को उसके सभी पहलुओं के साथ चित्रित किया गया है।
- **समकालीन समाज का यथार्थवादी चित्रण:** कालिया के उपन्यास , जैसे 'दौड़', भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के दौर में युवा पीढ़ी के जीवन को यथार्थवादी तरीके से प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने समकालीन समाज के विभिन्न मुद्दों जैसे आरक्षण और दलित चेतना को भी अपनी कहानियों में उजागर किया है।
- **पहचान की तलाश:** उनके कई अध्ययनों में कविताओं में एक महिला की पहचान की तलाश का विश्लेषण किया गया है , जिसमें वह अपनी पहचान स्थापित करने और समाज में सम्मान पाने का प्रयास करती है।
- **भाषा और शिल्प विधान:** कुछ अध्ययनों ने उनके साहित्य में शिल्प विधान और भाषा शैली के प्रभावी उपयोग पर भी ध्यान केंद्रित किया है , जिसमें उन्होंने अपनी भावनाओं को भाषा के माध्यम से व्यक्त किया है।

ममता कालिया के साथ गौरी देशपांडे कमला दास और ममता कालिया की भारतीय अंग्रेजी कविता में नारीवाद का एक अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त , मीना झा ने ममता कालिया के लेखन पर एक आलोचनात्मक लेख लिखा है। यह अध्ययन नारीवाद के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है और इन कवियों की रचनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करता है।

- **गौरी देशपांडे:** बरोट माधवीबेन प्रवीणकुमार ने गौरी देशपांडे, कमला दास और ममता कालिया की भारतीय अंग्रेजी कविता में नारीवाद का तुलनात्मक अध्ययन किया है।
- **मीना झा:** मीना झा ने ममता कालिया के लेखन पर एक आलोचनात्मक लेख लिखा है, जो उनके लेखन की विशेषताओं और सामाजिक सरोकारों को रेखांकित करता है।

पितृसत्ता के बन्धनों से मुक्त कर स्त्री को 'वस्तु' से 'मानव' का स्थान प्रदान करने वाली पहल ही स्त्री विम र्श कहलाती है। साहित्य सदैव से समाज को आलोकित करने वाला एक दर्पण रहा है। सृजन की धुरी स्त्री, साहित्य के माध्यम से समाज में बारबार चर्चित होती रही। हिंदी साहित्य की विवध विधाओं में अन्यतम उपन्यास ने स्त्री जीवन की विषम परिस्थितिओं का चित्रण बहुलता से किया। स्त्रीविमर्श की प्रमुख हस्ताक्ष

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:12(3), December, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

र ममता कालिया ने अपने पहले उपन्यास बेघर के माध्यम से पाठक समाज में स्त्री समाज के प्रति जागरू कता लाने की कोशिश की है। मूलतः कौमार्य मिथक पर आधारित इस उपन्यास ने दिखाया है कि चाहे व ह पत्नी हो या प्रेमिका, पढ़ीलिखी स्वावलंबी लड़की हो या फिर पत्नीत्वको सर्वस्व मानने वाली औरत, पितृसत्ता ने किसी को नहीं छोड़ा। अपनी कलम के माध्यम से इस उपन्यास में उन्होंने जिन स्त्रीपात्रों का सृ जन किया, वे स्त्री जीवन के एकएक चित्र पाठक समाज के मध्य उकेरती हैं। साथ ही साथ एक प्रश्न चिह्न भी खड़ा करती हैं कि पितृसत्ता की इस अमानवीयता की शिकार केवल स्त्री ही हो रही है या सम्पूर्ण मानव समुदाय के लिए यह एक चेतावनी है!

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. बेघर(1971), नरक दर नरक(1975), प्रेम कहानी(1980), लड़कियाँ(1987), एक पत्नी के नोट्स(1997), दौड़(2000), अँधेरे का ताला(2009), दुक्खम् - सुक्खम्(2009) कल्चर वल्चर(2016),सपनों की होम डिलीवरी(2017) - ममता कालिया
2. *हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्या रामचन्द्र शुक्ल*
3. प्रभा खेतान,(अनुवादक) : स्त्री : उपेक्षिता, हिन्द पॉकेट बुक्स, 2002, पृ. 24
4. *भूमंण्डलीकरण बाजार और हिन्दी – सुधीश पचौरी – अनुराग प्रकाशन – नई दिल्ली*
5. *विश्व बाजार में हिन्दी – महिपाल सिंह, देवेंद्र मिश्र – वाणी प्रकाशन – नई दिल्ली*
6. *स्रवंति द्विभाषा मासिक पत्रिका – दक्षिण भरत हिंदिप्रचार सभा – हैदराबाद*
7. *इंटर नेट से – सरला , नरसराव पेट*
8. *ममता कालिया के उपन्यास में चित्रित समश्याएँ* विविध आयाम डॉ ल हू रामाराव मुंडे पुजा पोब्लिके शसन्स कानपुर प्र. सं2016:
9. *महिला उपन्यासकर –डॉ. मधु संधु निर्मल पब्लिकेन्स दिल्ली* प्र. सं 2000